रूद्रनाथ दोहावली

सर्वनाथ सबकछु है जानत, वाके बारक बरे अजान।
चहुँ युग्या में एक संगम आये पावन करन भगवान।।

बिरल ज्ञान सुनावै शिव रूद्र निराकार, साकार ब्रह्मातन में आनि के।
ज्ञान अमृत पान करि सहज मिलै बैकुंठ रस ताहि जानि के।।

जुग सहस्त्र अरु शत महँ बीते रूद्र ज्ञान यज्ञ।
सभा मधि ब्रह्मकुमार कुमारिन लगै ध्यान सर्वज्ञ।।

मूर्ति होत न कोए, मनहिं सत्शिव निहारत है।
निराकार महिं लीन करि, स्वात्मा सुचारत है।।

कहे लोग सबहि में भगवन माटी, पाहन अरु बादर मैं।
जु मैं चलूँ पहन–पद जूती, बदरीनाथ निरादर रै।।

पूजै पाहन काहे जगबासी औ मूरत तन त्रिदेवों को।
भयो न कबहू तनधारी भगवन, काहे माटी मानवों को।।

बसहु बदरीनाथ जहँ पे, दुख के ना चिन्हहिं चमकै तारा।
न सुख न दुख चितव तहँ कोई, दूर भागै पाप अंधियारा।।

दर्पण महि ते बगिया निहारूँ, महँ में बैठा बूढ़ा शेर।
एक पंथ हिरणहिं टोली, दूजे देख्यो चिड़ि–बटेर।।

अपुणि अन्यायी अचरितहु, भारि भई कलजुग माहिं।
कारे मेघ ज्यों छटे बुराई सबहु बिछिन बिदेस त्राहि।।

तजिन चाहसि सदुख आत्मा, प्राण लगै दुर्गम कंदरा।
चारत चरि न जाये चार, कंटक भांति लगै धरा।

समझाए न हिये समझै, परमत परबानी कुमितरा।
वायु विन व्याकुल भए मनुज, त्यों बदरी से बिछरा।

प्रलोभन महँ फाँस लीन्हा, मनमोहनी देहु पाई के।
जगमोह बीच भागै मनु , मुरि–मुरि लखाई के।
अलगै जुड़ै लौह–चुंबक ज्यों, अभक्त–ईशहु मिल जाई के।
अथर थर कुमति सुमति भए, जोग अगन लगाई के।।

परहित करि गावै नहिं, परदोषिन जु भूल जावै।
तमोगुन सब छाड़ि दे, सो जगजीता कहलावै।
हरि पुष्प पे निशदिन जु भौंरे भांति मँडरावै।
मनु एक में रहे रमाये, हरि हस्त तै सतयुग पावै।।

हरि ज्वर जब जायो चढ़, उतार सकै न कोए।
औगुन दोछ जात सहज तें, सरस जीवन होए।।

जड़ बुद्धि चेतन बनै, मुख महँ हरि नाव जो होए।
जागत सोवत ध्यावत ताहि, धीरज न कबहु सो खोए।
दृग–द्वारहु लखै वहै, पुनीत पिता सर्वपाप को धोए।
औ हरि जोग रस संचै जु, सौभागिन माला को पोए।।

पहर कोए निकास सब लेयो, हरि ध्यान धर लीजिए।
मूरति पूजन छारि के, मन तै पूजन कीजिए।
तम काजु तम चिंतनु, बिरथ समय न दीजिए।
हरि गुन के सिंचन हित, हरि नीर महँ भीजिए।।

चित महँ लखि लेई बसाई, मिली अरणी सम शांति।
सबजानी सबगुनी कृपा तै, बिलुप्त भए भ्रम–भ्रांति।

शिव सम सद्गुणी होन हेत, लीजै मन सबल समाना।

पाप कुकर्म औ अभिमाना, गृह नहिं होत तज जाना।।

हरि रूप बीज है छरिको मन ते सिमरन जल।
निर्बुद्धिहु सुबुद्धि मिलै औ अमृत रूपी ज्ञान फल।
शिव ज्ञान है अंधनि औषधि, डारो नैन में ज्ञान काजल।
निखिल जीवन उजरित होय, स्वर्ग सुखनि गहे सकल।।

ध्यान धर ल्यौ सुख सागर का, पावन गीता निर्मानी का।
हरि गुन घास चरि ल्यौ गउ सम, नरनि नारायण बनानी का।
ताका सुमिरनहिं शक्ति हैं, बिश्वास मधुफल पानि का।
स्वर्ग सहित दीर्घायु मिलै, भय न मरन अकालि का।।

वरि–वारि हर जुग माहिं, रावरी सदा सुरति भुलायो।
जगत सकल सब रुख बिसाला, बिसरि तोहे तौ मुरझायो।।

दुराचार मांसाहार लगि अल्पहु कुकर्म छोड़िए।
तमोप्रधान जग मन हटाई, शिव प्रभु महँ जोड़िए।
अखर पढ़ै हरि, कछु करै हरि अरू हरि सुपनहुँ माहिं।
अस कीजै मन प्रभु मगन, सबहु लखि लखै कछु नाहिं।।

मोह मद लोभ तज डारो, काम क्रोध तुरतहिं भूलो।
मिलै नहिं जु कोए उपाय, जोग हिंडोले बैठि झूलो।
जोग किए मिलै बहु बल, बिनशै सर्व रोग विकार।
पापात्मा पावन होए, जो सब करै लोग विचार।।

जगती ज्योत बनै सब रूह, यही बस भगवन शिव स्वप्न।
सुख शान्ति जग मैं आये, माया सब होये पूर्ण पतन।।

Prepared By : - Ravi Verma
email me on :
myselfraviverma@gmail.com